फार्मर्स फर्स्ट परियोजना

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agri search with a human touch

Farmer FIRST Programme
Enriching knowledge, Integrating Technology

ग्रामीण युवकों के स्व रोजगार हेतु
कुक्कुट पालन

राजेश कुमार, सी.पी. नाथ, एम.पी.एस. यादव, शशिकान्त, देवराज,
चन्द्रमणि त्रिपाठी, प्रदीप कुमार एवं शिवाकान्त

भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर – 208 024

बेवसाइटः https://iipr.icar.gov.in

भाकृअनुप
ICAR

INDIAN INSTITUTE OF PULSES RESEARCH
भादअस

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहॉ पर लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती हैं और उनके जीविकोपार्जन का मुख्य स्रोत कृषि एवं पशुपालन है। मनुष्य के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का होना नितान्त आवश्यक है और इसके विकास में मुर्गी पालन की अहम भूमिका है । देश में मुर्गी पालन का व्यवसाय लगातार तेजी से बढ़ता जा रहा है। छोटे गाँव से लेकर महानगरों तक इसकी मॉग में लगातार वृद्धि जारी है। इसका सहज अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले कुछ सालों में मुर्गी पालन व्यवसाय ने बहुत तेजी से गति पकड़ी है। चिकन उत्पादन लगभग 8 से 10 प्रतिशत हर साल की दर से बढ़ रहा है। इस व्यवसाय में अच्छा मुनाफा कमाने के लिए जरूरी है कि आपको इससे सम्बन्धित तकनीकी जानकारी अच्छी तरह से हो, जैसे कि मुर्गी के लिये बाड़ा बनाना, नस्ल की जानकारी, आहार खिलाना और रख–रखाव। *ब्रायलर* चिकन के जन्म के समय 40 ग्राम वजन होता है। दस सप्ताह के अन्दर ही *चिकन* का वजन 40 ग्राम से बढ़कर करीब डेढ़ से दो कि.ग्रा. तक हो जाता है। स्थानीय बाजार में संकर *ब्रायलर* चूजों की उपलब्धता मुख्य तौर पर मांस के लिए होती है। इसके भी दो प्रकार हैं– पहला भारत मे *कमर्शियल ब्रायलर* नस्ल– *केरिब्रो,बाबकॉब, कृषिब्रो,कलर ब्रायलर,हाई ब्रो,वेनकॉब*। दूसरा दोहरी उपयोगिता वाला *ब्रायलर* नस्ल– *क्रायलर डुयूअल, रोड आयरलैंड,रेड बनराजा,ग्राम प्रिया*।

मुर्गी पालन की कुछ अपनी अहम विशेषताएं है, जिसके लिए उसकी पहचान बनी हुयी है–

1. **कम समय मे अपनी संतति उत्पादन की क्षमता**
2. **कम समय मे शारीरिक वृद्धि**
3. **आहार उत्पादन क्षमता**

उपरोक्त लिखित विशेषताओं के कारण ग्रामीण एव शहरी क्षेत्रों के छोटे व बड़े कुक्कुट पालकों का कम समय में अधिक आमदनी एवं अपना रोजगार करने का सुलभ एवं आसान अवसर प्रदान करता है। प्रदेश में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष 22 अण्डे व 300 ग्राम कुल माँस की माँग है, जिसमे कुक्कुट से 5 अण्डे व 100 ग्राम माँस उपलब्ध ही है। इस कारण लगभग 100 लाख अण्डे व 972 लाख एक दिवसीय ब्रायलर चूजें प्रतिदिन दूसरे प्रदेशों से आयात करना पड़ता है। ब्रायलर पालन के ब्यवसाय में कम लागत एवं कम समय में अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए 100, 200, 500, 1000 पक्षियों की योजना बना सकते हैं।

मुर्गी पालन के लिए आवास – *चिकन* या चूजे की अच्छी बढ़त एवं पर्याप्त वजन की बढ़वार के लिए अच्छे एवं आरामदायक *शेड* का होना बहुत जरूरी है जिसके लिए कुछ खास बातों पर ध्यान देना आवश्यक है जो निम्न हैं :–

1. जगह का चुनाव– पर्याप्त जगह की व्यवस्था, पानी की बेहतर आपूर्ति और बिजली की व्यवस्था, ऊँची जगह का चुनाव ताकि बरसात के दिनो में जल भराव न हो सके, वाहनो के आने जाने की अच्छी व्यवस्था के साथ मुख्य सड़क मार्ग से संपर्क हो, रिहायशी इलाके से दूर हो, माल की खपत के लिए सीधे बाजार से संपर्क हो।

2. आवास या *शेड* की डिजाइन– शेड मे हवा के आने जाने की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए, डिप लीटर सिस्टम में प्रति चूजा एक वर्गफीट की जगह हो, लम्बाई में शेड की दिशा पूर्व–पश्चिम होनी चाहिए।

3. आवास या *शेड* व्यवस्था– जहॉ तक सम्भव हो, मुर्गी पालन के लिए आवास की व्यवस्था सस्ती कराएं ताकि बची हुयी रकम का उपयोग उसके चारे, दाने एवं दूसरे सामान खरीदने में किया जा सके। आवास निर्माण सस्ता हो, इसके लिए स्थानीय सामान का बेहतर तरीके से इस्तेमाल करें जैसे कि बांस, मिट्टी, छप्पर आदि। मनमाफिक मांस उत्पादन के लिए बेहतर प्रबंधन पर जोर दें और इसके लिए निम्न बातों का ध्यान रखें :

***ब्रायलर ब्रीड* का चयन**– अच्छी गुणवत्ता वाले एक दिन के चूजे का चुनाव करना चाहिये।

चूजे के घर पहुँचने के पहले की तैयारी– पहले से इस्तेमाल किये जा रहे बिछावन को हटा दें और दूसरे सामान की अच्छी तरह सफाई करें। पालकी और पूरे *पोल्ट्री* घर में *सेनिटाइजर* का छिड़काव करें व अच्छी किस्म के कीटाणुनाशक का छिड़काव करें। पानी की पाइप की अच्छी तरह सफाई करें। अच्छे *एजेंट* की मदद से *पॉल्ट्री* हाउस में धुआ कराएं। पहले सप्ताह चूजे की सुरक्षा का पूरा घ्यान रखें।

वेंटिलेशन– आवास या *शेड* में पर्याप्त हवा आ सके, इसके लिए *क्रास वेंटिलेशन* की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रकाश–पहले दिन से लेकर *चिकन* के बड़ा होने तक हर दिन 24 घंटे बिजली की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

***ब्रॉयलर* पालन में *डीप लिटर* प्रबंधन**– *शेड* के भीतर चूजे की *लिटर* में धान की भूसी, लकड़ी का बुरादा और गेहूँ की भूसी आदि का इंतजाम हो। पुराने और नये चूजे के लिए पुराने लिटर को हटाकर साफ–सुथरी *लिटर* का इंतजाम करना। ज्यादा नमी से *लिटर* में होने वाले कड़ापन से बचाने की कोशिश करने के लिए उसे नियमित अंतराल पर हिलाते–डुलाते रहना चाहिए। *शेड* के भीतर नमी की मात्रा को संतुलित रखने की कोशिश करनी चाहिए।

***चिकन* के लिए चारा का प्रबंधन**–मुर्गी पालन में चारा प्रबंधन बेहद अहम कड़ी है और साथ ही सबसे अधिक खर्च इसी मद मे होता है जो उत्पादन को काफी प्रभावित करता है। व्यवसायिक मुर्गी पालन में अच्छे परिणाम के लिए चारा और चारे का कुशाग्र प्रबंधन बेहद जरूरी है। वही पर जब इस मद में कमी रह गयी तो चूजे को कई बीमारियॉं लग जाती हैं जिससे उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होता है। यहॉं पर ध्यान देना बेहद जरूरी हो जाता है कि जो चारा हम मुहैया करा रहे हैं उसमे सभी जरूरी पोषक तत्व यानी कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, खनिज लवण एवं विटामिन्स भी शामिल हों। नियमित पोषक तत्वों के अलावा अलग से कुछ और बेहतर पोषक तत्व देने की जरूरत है जिससे खाना ठीक से पच सके और साथ ही उनका जल्दी से विकास हो सके।

***ब्रॉयलर फीड* या चारे के प्रकार**–

चूजे की उम्र	*फीड* या चारे की किस्म
0–10 दिन	*प्री स्टार्टर*
11–21 दिन	*स्टार्टर*
22 दिन से अधिक	*फिनिशर*

ब्रॉयलर का दाना

दाना मिश्रण प्रतिशत में				
अवयव	1	2	3	4
अनाज दलिया (मकई, गेहूँ, बाजरा, ज्वार, महुआ आदि)	56	52	57	55
मूँगफली की खली	20	25	15	20
चोकर चावल का कना, चावल *ब्रान* आदि	10	11	18	15
मछली का चूरा	12	10	8	8
हड्डी का चूरा	2.5	2.5	2.5	2.5
लवण मिश्रण	1.5	1.5	1.5	1.5
साधारण नमक	0.5	0.5	0.5	0.5
दाना मिश्रण सं. 1 एवं 2 को छः सप्ताह तक एवं उसके बाद 3 एवं 4 सं. खिलाएं। प्रति 100 कि.ग्रा. दाना मिश्रण में *विटामिन सप्लीमेंट* 25 ग्राम खिलाएं।				

मुर्गी पालन की अनुमानित आय एवं व्यय

विवरण	100 चूजे	200 चूजे	500 चूजे
अनावर्तक व्यय			
1. भूमि स्वयं की होगी	–	–	–
2. आवास 1 .5 वर्ग फुट / पक्षी,दर ₹ 100 / वर्ग फुट	15,000	30,000	75,000
3. उपकरण 10 / –प्रति पक्षी	1,000	2,000	5,000
योग	16,000	32,000	80,000

आवर्तक व्यय

1. एक दिवसीय चूजें, दर ₹ 23 / –प्रति चूजा 3 प्रतिशत अतिरिक्त मृत्यु दर के साथ	2369	4738	11845
2. आहार 3.00 किग्रा / पक्षी, दर ₹ 20 / – प्रति कि.ग्रा.	6000	12000	30000
3. विविध व्यय ₹ 6 / पक्षी	600	1200	2400
4. अन्य व्यय ₹ .			
एक *बैच* पर खर्च	9269	18538	46345
सात *बैच* पर खर्च	64883	129766	324415

योजना की लागत

अनावर्तक व्यय	16,000	32,000	80,000
2 *बैच* पर आवर्तक व्यय	18,538	37,076	92,690

वार्षिक आय विवरण

एक बैच की बिक्री से आय भार 1.5 किग्रा प्रति ब्रायलर दर ₹ 100 / – कि.ग्रा. (एक *बैच* से)	15,000	30,000	75,000
खाली बोरे से आय	500	1,000	2,500
एक *बैच* से आय	20,000	31,000	77,500
सात *बैच* से आय	1,40,000	2,17,000	5,42,500
वार्षिक आय	75,117	87,234	2,18,085

प्रकाशक : निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर–24
संकलन : डॉ. राजेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष (कार्यवाहक), सामाजिक विज्ञान विभाग
संपादन : डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव
प्रकाशन सं. : 07 / 2021
मुद्रित : 2021